

RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

Key Point

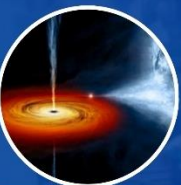
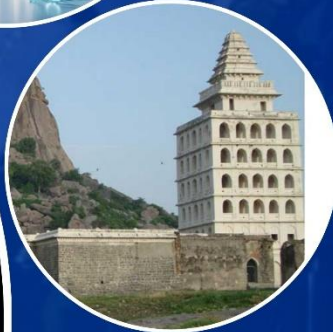
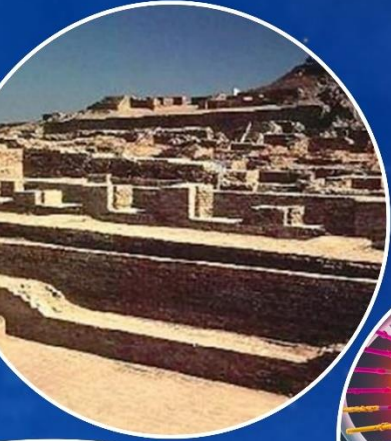
DATE

सितम्बर

25

2024

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index



By Ankit Avasthi Sir

छठा क्वाड शिखर सम्मेलन 2024

हाल ही में, संयुक्त राज्य अमेरिका के डेलावेयर में छठा क्वाड शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। यह चौथा व्यक्तिगत क्वाड लीडर्स शिखर सम्मेलन था। इस बैठक का उद्देश्य इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में साझेदारी और सहयोग को बढ़ाना था।

छठा क्वाड शिखर सम्मेलन: मुख्य बातें

स्वास्थ्य:

- ✓ **क्वाड स्वास्थ्य सुरक्षा साझेदारी (QHSP):** 2023 में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्वास्थ्य सुरक्षा समन्वय को बढ़ाने के लिए इस पहल की शुरुआत की गई।
- ✓ **गर्भाशय-ग्रीवा कैंसर का उपचार:** क्वाड कैंसर मूनशॉट जैसी नई पहलों की घोषणा की गई है।
- ✓ **महामारी संबंधी तैयारी:** अमेरिका ने 14 हिंद-प्रशांत देशों में संक्रामक रोगों की रोकथाम और प्रतिक्रिया क्षमताओं को बढ़ाने के लिए 84.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की वित्तीय सहायता देने का वादा किया है।



समुद्री सुरक्षा:

- ✦ **मैत्री पहल:** क्वाड ने क्षेत्रीय समुद्री सुरक्षा क्षमताओं को सुदृढ़ करने के लिए हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की है।
- ✦ **IPMDA की शुरुआत:** वर्ष 2022 में अवैध गतिविधियों पर नजर रखने और समुद्री सुरक्षा में सुधार के लिए इंडो-पैसिफिक पार्टनरशिप फॉर मैरीटाइम डोमेन अवेयरनेस (IPMDA) की स्थापना की गई।
- ✦ **हिंद-प्रशांत लॉजिस्टिक्स नेटवर्क:** त्वरित आपदा प्रतिक्रिया के लिए एक लॉजिस्टिक्स नेटवर्क की स्थापना की गई है, जिसका लक्ष्य नागरिक प्रतिक्रियाओं में सुधार करना है।
- ✦ **तटरक्षक सहयोग:** अंतर-संचालन क्षमता को बढ़ाने के लिए 2025 तक क्वाड-एट-सी शिप ऑ जर्वर मिशन की योजना बनाई गई है।

गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे का विकास:

- ✦ **डिजिटल अवसंरचना सिद्धांत:** क्वाड ने सुरक्षा और समावेशिता को ध्यान में रखते हुए डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना के विकास के लिए सिद्धांत स्थापित किए हैं।
- ✦ **भविष्य की क्वाड पोर्ट्स पार्टनरशिप:** इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अनुकूल बंदरगाह बुनियादी ढाँचे के विकास को समर्थन देना है।
- ✦ **समुद्र के अंदर केबल और डिजिटल कनेक्टिविटी:** समुद्र के अंदर केबल परियोजनाओं के लिए क्वाड साझेदारों ने 140 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक की प्रतिबद्धता जताई है।
- ✦ **क्वाड इन्फ्रास्ट्रक्चर फेलोशिप:** इसका लक्ष्य बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में निवेश को बढ़ावा देना और क्षेत्रीय क्षमता को उन्नत करना है।

साइबर सुरक्षा: क्वाड ने वाणिज्यिक समुद्री दूरसंचार केबलों की सुरक्षा के लिए एक एक्शन प्लान विकसित किया है, ताकि डिजिटल कनेक्टिविटी, वैश्विक वाणिज्य और समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सके।

आतंकवाद का मुकाबला: क्वाड नेताओं ने आतंकवाद के खतरों और उनके निवारण के लिए बेहतर प्रथाओं और सूचना साझाकरण पर चर्चा की। आतंकवाद निरोधक कार्य समूह (CTWG) मानव रहित हवाई प्रणाली (C-UAS) और अन्य खतरों पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

पीपुल-टू-पीपुल पहल: भारत ने हिंद-प्रशांत के छात्रों को तकनीकी संस्थानों में इंजीनियरिंग कार्यक्रम पूरा करने के लिए 500,000 अमेरिकी डॉलर मूल्य की 50 क्वाड छात्रवृत्तियों की नई पहल की घोषणा की है।

महत्वपूर्ण एवं उभरती हुई प्रौद्योगिकी

- ✦ **ओपन रेडियो एक्सेस नेटवर्क (RAN) और 5G:** 2023 में पलाऊ में पहला ओपन RAN लॉन्च किया गया है, जिसका लक्ष्य एक सुरक्षित दूरसंचार पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।
- ✦ **कृषि में AI का उपयोग:** अगली पीढ़ी की कृषि को सशक्त बनाने के लिए AI-एंगेज पहल के माध्यम से सहयोगी अनुसंधान को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- ✦ **बायोएक्सप्लोर पहल:** यह पहल रोग निदान, फसल अनुकूलन और स्वच्छ ऊर्जा समाधान में नवाचार हेतु AI का उपयोग करने का लक्ष्य रखती है।
- ✦ **सेमीकंडक्टर सहयोग:** क्वाड नेताओं ने सेमीकंडक्टर आपूर्ति श्रृंखला जोखिमों के समाधान के लिए एक सहयोग जापान पर सहमति जताई है।
- ✦ **क्वांटम प्रौद्योगिकी:** क्वाड इन्वेस्टर्स नेटवर्क (QUIN) द्वारा क्वांटम पारिस्थितिकी तंत्र में सामूहिक रूप से पूंजी और विशेषज्ञता का लाभ उठाने के तरीकों पर प्रकाश डाला गया है।

जलवायु एवं स्वच्छ ऊर्जा:

- ✦ **उन्नत पूर्व चेतावनी प्रणालियाँ:** अमेरिका, प्रशांत द्वीप देशों के लिए उड़ी-मुद्रित मौसम केंद्र उपलब्ध कराएगा, जबकि ऑस्ट्रेलिया और जापान क्षेत्रीय आपदा जोखिम न्यूनीकरण में मदद कर रहे हैं।
- ✦ **क्वाड स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला कार्यक्रम:** इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षित और विविध स्वच्छ ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखलाओं का विकास करना है।
- ✦ **भारत की पहल:** भारत ने फिजी, कोमोरोस, मेडागास्कर, और सेशेल्स में नई सौर परियोजनाओं के लिए 2 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश करने का संकल्प लिया है।

एशिया पावर इंडेक्स 2024

भारत ने हाल ही में एशिया पावर इंडेक्स में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है, जिसमें उसने जापान को पीछे छोड़ते हुए तीसरे सबसे शक्तिशाली देश का दर्जा प्राप्त किया है। यह बदलाव भारत की बढ़ती भू-राजनीतिक हैसियत, सक्रिय विकास और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था का संकेत है।

भारत के उदय के मुख्य कारक:

1. आर्थिक विकास:

- ✓ भारत ने महामारी के बाद तेजी से आर्थिक सुधार किए, जिससे उसकी आर्थिक क्षमता में 4.2 अंकों की वृद्धि हुई।
- ✓ भारत की जीडीपी और क्रय शक्ति समता (PPP) के संदर्भ में इसे दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में पहचान मिली है।
- ✓ बड़ी और युवा आबादी के चलते भारत के आर्थिक विकास की संभावनाएं आने वाले दशकों में और भी बढ़ सकती हैं।

2. भविष्य की संभावनाएं:

- ✓ भारत के भविष्य के संसाधन स्कोर में 8.2 अंकों की वृद्धि देखी गई है, जो इसके युवा जनसांख्यिकीय लाभांश का परिणाम है।
- ✓ भारत की युवा आबादी इसे अन्य प्रमुख एशियाई देशों, जैसे चीन और जापान, से आगे रखती है। यह आबादी आने वाले वर्षों में श्रम बल को बढ़ावा देती रहेगी।

3. कूटनीतिक प्रभाव:

- ✓ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी कूटनीति की है, जिसके तहत गुटनिरपेक्ष रणनीति ने इसे वैश्विक मान्यता दिलाई है।
- ✓ 2023 में भारत कूटनीतिक संवादों में छठे स्थान पर रहा, जो बहुपक्षीय मंचों पर उसकी बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है।
- ✓ भारत ने क्वाड (Quad) जैसी सुरक्षा पहलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे इसका क्षेत्रीय सुरक्षा तंत्र में योगदान और भी बढ़ गया है।

रक्षा सहयोग और आर्थिक पहुंच:

- ✦ भारत ने फिलीपींस के साथ ब्रह्मोस मिसाइल सौदा किया, जो इस क्षेत्र में उसकी रक्षा क्षमताओं और रक्षा निर्यात में बढ़ते कदमों का प्रतीक है।
- ✦ हालांकि भारत औपचारिक सैन्य गठबंधनों से दूर रहता है, परंतु उसने अपनी रक्षा नीति को मजबूत करने और निकटवर्ती देशों में अपनी शक्ति बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया है।

एशिया में भारत की भूमिका:

- ✓ भारत की बढ़ती आर्थिक और कूटनीतिक ताकत के साथ, उसे हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक प्रमुख शक्ति के रूप में देखा जा रहा है।
- ✓ एशिया पावर इंडेक्स ने भारत की बढ़ती शक्ति को दर्शाया है, और यह उम्मीद जताई गई है कि भारत भविष्य में अपने प्रभाव को और भी बढ़ाएगा।
- ✓ भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और बहुपक्षीय कूटनीति में उसकी भागीदारी इसे वैश्विक राजनीति में एक अहम खिलाड़ी बनाती है।

एशिया पावर इंडेक्स

परिचय: लोवी इंस्टीट्यूट द्वारा 2018 में शुरू किया गया एशिया पावर इंडेक्स, एशिया में विभिन्न देशों की सापेक्ष शक्ति को मापने और रैंक करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। यह सूचकांक मौजूदा शक्ति वितरण को दर्शाता है और समय के साथ शक्ति संतुलन में होने वाले परिवर्तनों को ट्रैक करता है।

रैंकिंग का आधार: यह सूचकांक 27 देशों और क्षेत्रों को उनके बाहरी वातावरण को आकार देने की क्षमता के आधार पर रैंक करता है। इसका दायरा पाकिस्तान, रूस से लेकर ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका तक फैला हुआ है। 2024 के संस्करण में पहली बार तिमोर-लेस्ते को शामिल किया गया है, जो आसियान में संभावित प्रवेश के चलते इसके बढ़ते महत्व को दर्शाता है।

मापदंड: यह परियोजना आठ विषयगत उपायों में 131 संकेतकों के माध्यम से अंतराष्ट्रीय शक्ति का मूल्यांकन करती है, जो निम्नलिखित हैं:

- 🌟 सैन्य क्षमता और रक्षा नेटवर्क
- 🌟 आर्थिक क्षमता और संबंध
- 🌟 कूटनीतिक प्रभाव
- 🌟 सांस्कृतिक प्रभाव
- 🌟 लचीलापन
- 🌟 भविष्य के संसाधन

डेटा स्रोत: इस सूचकांक में आधे से अधिक डेटा बिंदु मूल लोवी इंस्टीट्यूट शोध से लिए गए हैं, जबकि अन्य सैकड़ों सार्वजनिक रूप से उपलब्ध राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्रोतों से एकत्र किए गए हैं।

गतिशील विशेषताएं: लोवी इंस्टीट्यूट एशिया पावर इंडेक्स में एक इंटरैक्टिव मानचित्र, भार कैलकुलेटर, नेटवर्क विश्लेषण, और देश की तुलना जैसी सुविधाएँ शामिल हैं, जो इसे एशिया में शक्ति अध्ययन के लिए एक अपरिहार्य अनुसंधान उपकरण बनाती हैं।

जिंजी किला यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल सूची के लिए नामांकित

हाल ही में जिंजी किला, जो तमिलनाडु के विल्लुपुरम ज़िले में स्थित है, 'मराठा सैन्य परिदृश्य' के भाग के रूप में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल सूची के लिए नामांकित किया गया है। इस नामांकन में जिंजी किले के साथ 11 अन्य किलों को भी शामिल किया गया है।

जिंजी किले के बारे में:

- ✓ **स्थान:** जिंजी किला, तमिलनाडु के विल्लुपुरम ज़िले में, राजगिरि, कृष्णगिरि, और चंद्रगिरि पहाड़ियों पर स्थित है।
- ✓ **अन्य नाम:** इसे "ईस्ट ऑफ ट्रॉय" कहा जाता है, जो इसे प्रायद्वीप भारत के सबसे अभेद्य किलों में से एक बनाता है।
- ✓ **रणनीतिक महत्व:** इसकी 60 फुट चौड़ी प्राचीर और 80 फुट चौड़ी खाई ने इसे फ्रांसीसी और ब्रिटिश के बीच कर्नाटक युद्ध के दौरान महत्वपूर्ण बना दिया।

ऐतिहासिक अवलोकन:

- ☑ **निर्माण:** जिंजी किले का निर्माण 1200 ई. में कोनार राजवंश के अनंत कोन द्वारा किया गया और इसे कृष्णगिरि नामित किया गया।
- ☑ **विजयनगर साम्राज्य का पुनर्निर्माण:** बाद में, विजयनगर साम्राज्य ने किले का पुनर्निर्माण किया।
- ☑ **शिवाजी का अधिकार:** 1677 में छत्रपति शिवाजी ने किले पर अधिकार कर लिया, और यह 1698 तक मराठों के नियंत्रण में रहा।
- ☑ **मुगलों का अधीन:** किला बाद में मुगलों के अधीन आ गया और शिवाजी के पुत्र राजाराम प्रथम के समय में मराठों का अंतिम दुर्ग बना।
- ☑ **नवाबों का नियंत्रण:** 1714 में इसे अर्काट के नवाबों ने अपने अधीन लिया, और यह 1749 तक उनके नियंत्रण में रहा।
- ☑ **फ्रांसीसियों और अंग्रेजों का अधिकार:** 1750 से 1770 तक यह किला फ्रांसीसियों के अधिकार में रहा, बाद में यह अंग्रेजों के नियंत्रण में चला गया।

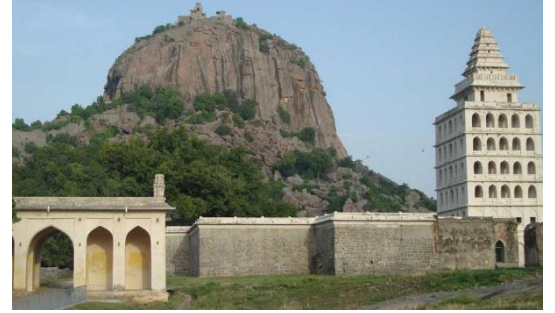
वास्तुकला:

- ✓ **महत्वपूर्ण संरचनाएँ:** किला परिसर में कई मंदिर और तीर्थस्थल हैं, जैसे:
 - सीहीदार कुआँ
 - कल्याण महल
 - दरबार हॉल
 - तोप, घंटाघर, शस्त्रागार
 - एलीफेंट टैंक, अस्तबल, अन्न भंडार, व्यायामशाला
 - वेंकटरमण मंदिर और सदातुल्ला मस्जिद

जल आपूर्ति प्रणालियाँ: जिंजी किले में दो परिष्कृत जल आपूर्ति प्रणालियाँ हैं, जो किले के ऊँचाई वाले स्थानों पर भी निरंतर जल आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं।

प्रमुख पहाड़ियाँ:

- **राजगिरी पहाड़ी:** यह किले का सबसे ऊँचा (800 मीटर) स्थान है, जिसमें दुर्ग और रंगनाथ का मंदिर है।
- **कृष्णगिरि दुर्ग:** यह अपनी इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें गुंबददार छत वाला एक दर्शक हॉल भी शामिल है।
- **वेंकटरमण स्वामी मंदिर:** यह निचले किले परिसर में स्थित है और इसमें हिंदू महाकाव्यों की जटिल नक्काशी है।



यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के बारे में

- ✓ **परिभाषा:** विश्व धरोहर स्थल वह स्थान है जिसे यूनेस्को द्वारा उसके असाधारण सांस्कृतिक या प्राकृतिक महत्व के लिए मान्यता प्राप्त होती है।
- ✓ **उद्देश्य:** यूनेस्को विश्व स्तर पर उन सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों की पहचान, सुरक्षा और संरक्षण को बढ़ावा देता है जो मानवता के लिए विशिष्ट महत्व रखते हैं।
- ✓ **भारत में विश्व धरोहर स्थल:** सितंबर 2024 तक, भारत में 43 विश्व धरोहर स्थल हैं (35 सांस्कृतिक, 7 प्राकृतिक, 1 मिश्रित), जिनमें हाल ही में मोइदुल्ला - अहोम राजवंश की टीला-दफन प्रणाली को शामिल किया गया है।

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में नामांकन प्रक्रिया:

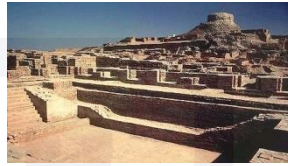
- ☑ **सूची तैयार करना:** किसी देश द्वारा महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत स्थलों की एक सूची बनाई जाती है।
- ☑ **नामांकन विवरण:** देश अनंतिम सूची से स्थलों का चयन करता है और नामांकन विवरण तैयार करता है।
- ☑ **मूल्यांकन:** अंतरराष्ट्रीय स्मारकों और स्थलों पर अंतरराष्ट्रीय परिषद (ICOMOS) और IUCN नामांकित स्थलों का मूल्यांकन करते हैं।
- ☑ **निर्णय प्रक्रिया:** समिति सलाहकारी सिफारिशों और मानदंडों की पूर्ति के आधार पर वार्षिक बैठक करती है कि किन स्थलों को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया जाए।

हड़प्पा सभ्यता की खोज के 100 वर्ष

20 सितंबर, 1924 को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के तत्कालीन महानिदेशक जॉन मार्शल ने "सिंधु घाटी की सभ्यता" की खोज की घोषणा की। इस महत्वपूर्ण खोज में एएसआई के दो पुरातत्वविदों, दया राम साहनी (जो एएसआई के पहले भारतीय महानिदेशक थे) और राखल दास बनर्जी, की अहम भूमिका थी, जिन्होंने क्रमशः हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई की।

हड़प्पा सभ्यता के बारे में:

- ✓ **विस्तार:** यह सभ्यता भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में 2,000 से ज्यादा स्थानों पर फैली हुई है, जिसमें ज्यादातर स्थल सिंधु और सरस्वती नदी घाटियों के बीच स्थित हैं।
- ✓ **प्रमुख शहर:** राखीगढ़ी, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, धोलावीरा, और गँवरिवाला।
- ✓ **वर्गीकरण:**
 - प्रारंभिक चरण (6000 ईसा पूर्व-2600 ईसा पूर्व)
 - परिपक्व अवधि (2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व)
 - बाद की अवस्था (1900 ईसा पूर्व-1300 ईसा पूर्व)



नए साक्ष्य:

- ✦ **पुरातात्विक उत्खनन:** हाल ही में गुजरात के कच्छ के पडता बेट में 5,200 वर्ष पुरानी हड़प्पा बस्ती का पता चला है।
- ✦ **डीएनए विश्लेषण:** राखीगढ़ी से प्राप्त कंकालों के डीएनए विश्लेषण से पता चला है कि हड़प्पावासियों का डीएनए आज भी मौजूद है, और दक्षिण एशियाई आबादी का अधिकांश हिस्सा उनके वंशज प्रतीत होता है। इसके अलावा, सूदूर क्षेत्रों के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों के कारण जीनों का मिश्रण भी मिलता है।

हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारण:

- ✦ **आक्रमण सिद्धांत:** कुछ विद्वानों का मानना है कि इंडो-यूरोपीय जनजातियाँ, जिन्हें आर्य कहा जाता है, ने आक्रमण किया और हड़प्पा सभ्यता (IVC) को ध्वस्त कर दिया। हालाँकि, बाद के समाजों में सांस्कृतिक निरंतरता के साक्ष्य इस अचानक आक्रमण के सिद्धांत को चुनौती देते हैं।
- ✦ **प्राकृतिक पर्यावरणीय परिवर्तन:** प्राकृतिक पर्यावरणीय परिवर्तनों का प्रभाव हड़प्पा सभ्यता के पतन में महत्वपूर्ण माना जाता है।
- ✦ **टेक्टोनिक गतिविधि:** भूकंपों के कारण नदियों के मार्ग बदल गए होंगे, जिससे आवश्यक जल स्रोत सूख गए होंगे और कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा होगा।
- ✦ **बाढ़:** नदी के मार्ग में परिवर्तन के कारण प्रमुख कृषि क्षेत्रों में बाढ़ आ गई होगी, जिससे कृषि स्थिरता को और अधिक खतरा पैदा हो गया।

IVC साइटों से संबंधित हालिया पहल:

- ☑ **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (NMHC):** सागरमाला कार्यक्रम के तहत, पतन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (MoPSW) लोथल में एक NMHC विकसित कर रहा है। इसमें भारत के समुद्री इतिहास और विरासत को प्रदर्शित करने के लिए एक संग्रहालय, थीम पार्क, और शोध संस्थान शामिल हैं।
- ☑ **धोलावीरा का यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल होना:** जुलाई 2021 में, धोलावीरा को यूनेस्को द्वारा भारत का 40वाँ विश्व धरोहर स्थल नामित किया गया, जो इस क्षेत्र के सांस्कृतिक महत्व को दर्शाता है।
- ☑ **राखीगढ़ी को प्रतिष्ठित स्थल के रूप में विकसित करना:** केंद्रीय बजट (2020-21) में राखीगढ़ी (हिसार जिला, हरियाणा) को एक प्रतिष्ठित स्थल के रूप में विकसित करने का प्रस्ताव किया गया है, जिससे इस क्षेत्र की पुरातात्विक और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रचारित किया जा सके।

हड़प्पा सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ

नगर नियोजन:

- ✓ **नगरीय योजना प्रणाली:** हड़प्पा सभ्यता अपनी नगर नियोजन के लिए जानी जाती है। इसमें ग्रिड प्रणाली का प्रयोग किया गया था, जहाँ सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं।
- ✓ **दुर्ग:** मोहनजोदड़ो और हड़प्पा के नगरों में ऊँचाई पर स्थित दुर्ग थे, जहाँ उच्च वर्ग के लोग निवास करते थे।
- ✓ **ईंटों का प्रयोग:** हड़प्पा सभ्यता में पकी हुई ईंटों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया, जबकि समकालीन मिस्र में शुष्क ईंटों का प्रयोग होता था।
- ✓ **जल निकासी प्रणाली:** हड़प्पा सभ्यता में जल निकासी प्रणाली अत्यंत प्रभावी थी। हर छोटे और बड़े घर में स्वयं का स्नानघर और आँगन होता था।
- ✓ **अन्न भंडार:** अन्न भंडारों का निर्माण नगरों की प्रमुख विशेषता थी।

कृषि:

- ✦ **स्थानों का वितरण:** हड़प्पाई गाँव मुख्यतः प्लावन मैदानों के पास स्थित थे, जो अनाज का पर्याप्त उत्पादन करते थे।
- ✦ **अनाज की फसलें:** गेहूँ, जौ, सरसों, तिल, और मसूर का उत्पादन होता था।
- ✦ **कपास की खेती:** सिंधु सभ्यता के लोग कपास की खेती करने वाले पहले लोग थे।
- ✦ **पशुपालन:** हड़प्पाई लोग कृषि के साथ-साथ बड़े पैमाने पर पशुपालन भी करते थे।

अर्थव्यवस्था:

- ☑ **व्यापार के महत्व:** अनगिनत मुहरों, एकसमान लिपि और मापन की विधियों से यह पता चलता है कि व्यापार इस सभ्यता के जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।
- ☑ **वस्तु विनिमय प्रणाली:** धातु मुद्रा का प्रयोग नहीं होता था; वस्तु विनिमय प्रणाली मौजूद थी।
- ☑ **व्यापारिक संपर्क:** अरब सागर के तट पर कुशल नौवहन प्रणाली थी, और उत्तरी अफगानिस्तान में व्यापारिक बस्तियाँ स्थापित की गई थीं।

कृत्रिम एंजाइमों का विकास: नैनोजाइम्स की भूमिका

भारतीय नौसेना द्वारा 23-24 सितंबर 2024 को गोवा स्थित नेवल वॉर कॉलेज में गोवा समुद्री संगोष्ठी (जीएमएस) 2024 के पांचवें संस्करण का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी नेवल वॉर कॉलेज के नव उद्घाटित अत्याधुनिक चोल भवन में आयोजित की गई, जो इस आयोजन के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था।

संगोष्ठी का मुख्य विषय:

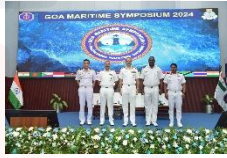
'आईओआर (हिंद महासागर क्षेत्र) में आम समुद्री सुरक्षा चुनौतियां - आईयू (गैर-कानूनी, अनियमित और अनियमित मछली पकड़ने) और अन्य अवैध समुद्री गतिविधियों जैसे गतिशील खतरों को कम करने के प्रयासों की प्रगति की दिशा'

यह विषय 'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' (SAGAR) के सिद्धांत पर आधारित था, जिसे हिंद महासागर क्षेत्र में शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए भारत के माननीय प्रधानमंत्री ने प्रतिपादित किया है।

प्रतिभागी देशों की सूची:

इस संगोष्ठी में 13 देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने भाग लिया, जिनमें शामिल हैं:

- बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मेडागास्कर, मलेशिया, मालदीव, मॉरीशस, म्यांमार, सेशेल्स, सिंगापुर, श्रीलंका, थाईलैंड, केन्या, तंजानिया



संगोष्ठी का उद्देश्य:

गोवा समुद्री संगोष्ठी 2024 का मुख्य उद्देश्य आईओआर में समुद्री क्षेत्र में गैर-पारंपरिक खतरों, जैसे कि आईयू मछली पकड़ने और अन्य अवैध समुद्री गतिविधियों, से निपटने के लिए रणनीतियों पर चर्चा करना था। संगोष्ठी ने क्षेत्रीय हितधारकों को एक मंच पर लाकर सहयोगात्मक सूचना-साझाकरण तंत्र और क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की।

मुख्य चर्चाएँ और निष्कर्ष:

- सूचना-साझाकरण तंत्र:** संगोष्ठी में सूचना का आदान-प्रदान करने और खतरों को समय पर पहचानने के लिए सहयोगात्मक प्रयासों को मजबूत करने पर बल दिया गया।
- गैर-पारंपरिक खतरों से निपटने की रणनीतियाँ:** उभरते समुद्री खतरों, जैसे अवैध मछली पकड़ने और समुद्री अपराध, से निपटने के लिए नई रणनीतियों पर चर्चा हुई।

भविष्य की दिशा:

संगोष्ठी के दौरान हुई चर्चाएँ और विचार-विमर्श 2025 में निर्धारित गोवा मैरीटाइम कॉन्क्लेव के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में कार्य करेंगे। इस तरह के मंच हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा, और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण माने जा रहे हैं।

इस प्रकार, जीएमएस 2024 ने समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में भारत की अग्रणी भूमिका को और मजबूत किया तथा क्षेत्रीय सहयोग को नई दिशा देने में अहम भूमिका निभाई।

भारतीय नौसेना

भारतीय नौसेना एक संतुलित और सुगठित त्रिआयामी बल है, जो महासागर की सतह, सतह पर और सतह के नीचे ऑपरेशनल गतिविधियों को संचालित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना है।

नियंत्रण और प्रशासन:

- नौसेनाध्यक्ष (CNS):** भारतीय नौसेना के ऑपरेशनल और प्रशासनिक नियंत्रण का प्रमुख, जो रक्षा मंत्रालय के एकीकृत मुख्यालय (नौसेना) से कार्य करता है।
- सहायक अधिकारी:** नौसेनाध्यक्ष की सहायता करने के लिए सह-नौसेनाध्यक्ष (VCNS) और तीन अन्य प्रमुख स्टाफ अधिकारी होते हैं:

- उप नौसेनाध्यक्ष (DCNS)
- कार्मिक प्रमुख (COP)
- सामग्री प्रमुख (COM)

कमान संरचना:

भारतीय नौसेना की तीन मुख्य कमानें हैं, प्रत्येक का संचालन एक फ्लैग अफसर कमांडिंग-इन-चीफ द्वारा किया जाता है:

- पश्चिम नौसेना कमान** (मुख्यालय: मुंबई)
 - पूर्वी नौसेना कमान** (मुख्यालय: विशाखापट्टनम)
 - दक्षिण नौसेना कमान** (मुख्यालय: कोच्चि)
- पश्चिम और पूर्वी नौसेना कमान: ये ऑपरेशनल कमानें हैं, जो क्रमशः अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में ऑपरेशनों का नियंत्रण करती हैं।
- दक्षिण कमान: यह मुख्य रूप से प्रशिक्षण के लिए जिम्मेदार है।

मानव रोग में एपिजेनेटिक्स की भूमिका

एपिजेनेटिक्स एक महत्वपूर्ण जैविक प्रक्रिया है जो बिना **डीएनए** अनुक्रम को बदले जीन अभिव्यक्ति को नियंत्रित करती है। यह प्रक्रिया **डीएनए और हिस्टोन प्रोटीन** पर होने वाले संशोधनों, जैसे **मिथाइलेशन** और **एसिटिलेशन**, के माध्यम से होती है। इसके अतिरिक्त, **गैर-कोडिंग आरएनए (ncRNA)** भी जीन अभिव्यक्ति को नियंत्रित करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

एपिजेनेटिक संशोधन और उनका महत्व:

एपिजेनेटिक संशोधन जीन को सक्रिय या निष्क्रिय कर सकते हैं। उदाहरण के लिए:

- ✓ **डीएनए मिथाइलेशन:** आमतौर पर जीन को दबाने का काम करता है।
- ✓ **हिस्टोन एसिटिलेशन:** जीन को सक्रिय करने में मदद करता है।



बाहरी और आंतरिक कारक जैसे **पोषण, तनाव, विषाक्त पदार्थों का संपर्क, उम्र बढ़ना और हार्मोनल विकार** इन संशोधनों को प्रभावित कर सकते हैं। इन संशोधनों का प्रभाव कभी-कभी पीढ़ियों तक भी देखा जा सकता है, जिसे **इंटरजेनेरेशनल और ट्रांसजेनेरेशनल एपिजेनेटिक विरासत** कहा जाता है।

एपिजेनेटिक्स और विकास:

मानव भ्रूण के विकास के दौरान, **क्रोमेटिन** संरचना में बड़े बदलाव होते हैं जो जीन अभिव्यक्ति को नियंत्रित करते हैं। ये परिवर्तन महत्वपूर्ण विकासत्मक चरणों में आवश्यक होते हैं। एपिजेनेटिक संशोधन **भ्रूण और पीजीसी (गर्म सेल्स)** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे विकासत्मक कार्यक्रम स्थापित होते हैं।

एपिजेनेटिक्स और रोग:

असामान्य एपिजेनेटिक संशोधन कई बीमारियों के लिए जिम्मेदार होते हैं। उदाहरण के लिए:

- ✦ **कैंसर:** इसमें जीन के **हाइपरमिथिलेशन और हाइपोमिथिलेशन पैटर्न** देखे गए हैं।
- ✦ **तंत्रिका संबंधी विकार:** जैसे **पार्किंसंस** और अवसाद में **एपिजेनेटिक** परिवर्तनों की भूमिका देखी गई है।
- ✦ **पर्यावरणीय कारक:** विषाक्त पदार्थों का संपर्क बीमारियों के विकास में योगदान दे सकता है।

जीवनशैली और एपिजेनेटिक्स:

जीवनशैली के कारक जैसे **आहार, व्यायाम, और तनाव, डीएनए मिथाइलेशन और हिस्टोन संशोधन** पर प्रभाव डालते हैं:

- ✦ **स्वस्थ जीवनशैली:** सकारात्मक एपिजेनेटिक प्रभाव डाल सकती है।
- ✦ **दीर्घकालिक तनाव:** हानिकारक एपिजेनेटिक परिवर्तनों का कारण बन सकता है।

एपिजेनेटिक थेरेपी:

चूंकि एपिजेनेटिक संशोधन प्रतिवर्ती होते हैं, इसलिए उन्हें **औषधीय और पर्यावरणीय** हस्तक्षेपों के माध्यम से पुनः प्रोग्राम किया जा सकता है। यह थेरेपी कैंसर और तंत्रिका अपक्षयी विकारों के उपचार में उपयोगी हो सकती है। हालाँकि, इस प्रकार की थेरेपी में नैतिकता और गोपनीयता से जुड़े मुद्दों पर ध्यान देना जरूरी है।

निष्कर्ष:

एपिजेनेटिक्स का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि कैसे बाहरी और आंतरिक कारक जीन अभिव्यक्ति को प्रभावित करते हैं और यह विभिन्न बीमारियों से कैसे जुड़ा होता है। इस जानकारी का उपयोग नई चिकित्सीय विधियों के विकास में किया जा सकता है, लेकिन इसके साथ ही नैतिक और सार्वजनिक नीति के मुद्दों पर विचार करना भी आवश्यक है।

गैर-कोडिंग आरएनए (ncRNA)

गैर-कोडिंग आरएनए (ncRNA) ऐसे **RNA अणु** होते हैं, जो प्रोटीन के रूप में **अनुवादित (translated) नहीं** होते। ये RNA अणु केवल अनुवाद न होने के बावजूद विभिन्न जैविक प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनका कार्य **प्रोटीन-कोडिंग जीन** से अलग होता है, लेकिन कोशिकीय प्रक्रियाओं के लिए ये अत्यंत आवश्यक होते हैं।

गैर-कोडिंग आरएनए के प्रकार:

✦ माइक्रोआरएनए (miRNA):

- ✦ छोटे, लगभग **20-25 न्यूक्लियोटाइड** लंबे RNA अणु होते हैं।
- ✦ ये mRNA के साथ मिलकर उसका विनाश या उसका अनुवाद रोकते हैं, जिससे जीन की अभिव्यक्ति को नियंत्रित किया जा सके।

✦ लंबे गैर-कोडिंग आरएनए (lncRNA):

- ✦ ये **200** से अधिक **न्यूक्लियोटाइड** लंबे होते हैं।
- ✦ जीन अभिव्यक्ति के **नियमन, क्रोमेटिन मॉडिफिकेशन, और मॉलिक्यूलर चैपरोन** जैसी प्रक्रियाओं में शामिल होते हैं।

✦ **रिबोसोमल आरएनए (rRNA):** यह राइबोसोम का मुख्य घटक होता है, जो **प्रोटीन संश्लेषण (protein synthesis)** में मदद करता है।

✦ **ट्रांसफर आरएनए (tRNA):** यह **अमीनो एसिड** को **राइबोसोम** तक पहुँचाता है और mRNA के अनुसार उन्हें प्रोटीन में जोड़ता है।

✦ **स्मॉल इंटरफेरिंग आरएनए (siRNA):** यह छोटे दोहरे फंसे हुए RNA होते हैं, जो mRNA के निशाने पर जाकर उसकी **टूट-फूट** कर देते हैं और **जीन साइलेंसिंग** में सहायक होते हैं।

पल्सर क्या हैं?

खगोलविदों ने ग्रीन बैंक टेलीस्कोप (GBT) का उपयोग करके टेरज़न 6 नामक गोलाकार क्लस्टर से जुड़े एक नए मिलीसेकंड पल्सर (MSP) की खोज की है, जिसे PSR J1751-3116A नाम दिया गया है। यह टेरज़न 6 में पाया गया पहला पल्सर हो सकता है।

पल्सर क्या होते हैं?

- ✓ पल्सर एक प्रकार के न्यूट्रॉन तारे होते हैं, जो बहुत तेजी से घूमते हैं और नियमित रूप से ऊर्जा (रेडियो तरंगों) छोड़ते हैं।
- ✓ इनका चुंबकीय क्षेत्र बेहद शक्तिशाली होता है और यह ध्रुवों से विकिरण (रेडियो तरंगों) का उत्सर्जन करता है, जो हमारी दृष्टि में पल्सर की तरह दिखता है।
- ✓ जब ये घूमते हैं, तो पृथ्वी पर एक नियमित समय अंतराल पर उनकी तरंगें दिखती हैं, जिसे हम स्पंदन के रूप में देखते हैं।
- ✓ पल्सर का द्रव्यमान सूर्य से थोड़ा ज्यादा होता है, लगभग 1.35 से 1.97 गुना तक।

न्यूट्रॉन तारे:

- ✦ न्यूट्रॉन तारे बहुत बड़े तारों के ढहने के बाद बचते हैं। ये अत्यधिक घने होते हैं और मुख्य रूप से न्यूट्रॉन से बने होते हैं।
- ✦ जब बड़े तारे का ईंधन समाप्त हो जाता है, तो उसका कोर न्यूट्रॉन में बदल जाता है और न्यूट्रॉन तारे का निर्माण होता है।

टेरज़न 6 गोलाकार क्लस्टर:

- ✦ यह क्लस्टर पृथ्वी से लगभग 21,800 प्रकाश वर्ष दूर है।
- ✦ इसमें भारी मात्रा में धातु और बहुत घने तारकीय समूह होते हैं, जिससे इसमें कई पल्सर होने की संभावना है।

PSR J1751-3116A की खोज:

- ✦ इसका स्पिन समय लगभग 5.33 मिलीसेकंड है।
- ✦ यह टेरज़न 6 क्लस्टर से संबंधित है और इसका फ्लक्स घनत्व 1.44 गीगाहर्ट्ज़ पर लगभग 23 μJy है।

शोध का निष्कर्ष:

- ✦ वैज्ञानिक मानते हैं कि यह पल्सर गतिशील अंतःक्रियाओं के कारण बना है, और इस क्लस्टर में और भी पल्सर हो सकते हैं, जिनकी खोज GBT और अन्य उन्नत दूरबीनों से की जा सकती है।

ग्रीन बैंक टेलीस्कोप (GBT):

- ✦ यह टेलीस्कोप अमेरिका के वेस्ट वर्जीनिया में स्थित है और यह दुनिया का सबसे बड़ा पूर्ण रूप से संचालित रेडियो टेलीस्कोप है।
- ✦ इसका आकार 100 मीटर × 110 मीटर है और इसका उपयोग खगोलीय पिंडों से आने वाली रेडियो तरंगों का अध्ययन करने में होता है, जैसे कि पल्सर और ब्लैक होल।

निष्कर्ष: GBT जैसे शक्तिशाली रेडियो टेलीस्कोप की मदद से खगोलविद टेरज़न 6 जैसे क्लस्टरों में नए मिलीसेकंड पल्सर खोज रहे हैं। यह खोज ब्रह्मांड, न्यूट्रॉन तारों और पल्सर के व्यवहार को बेहतर ढंग से समझने में मदद करती है।

शहरी गरीबी उन्मूलन पर MOHUA ने कार्यशाला आयोजित की

आवास और शहरी कार्य मंत्रालय (MOHUA) द्वारा 23 सितंबर 2024 को आयोजित शहरी गरीबी उन्मूलन कार्यशाला में शहरी क्षेत्रों में गरीबी के विभिन्न पहलुओं और उन्हें खत्म करने के लिए अपनाए जा सकने वाले प्रभावी तरीकों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। इस कार्यशाला में 28 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों तथा 25 चुनिंदा शहरों के अधिकारियों ने भाग लिया, जिन्होंने आगामी गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने में महत्वपूर्ण सुझाव दिए।



कार्यशाला की मुख्य बातें:

- ✓ कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शहरी गरीबी उन्मूलन के लिए पायलट योजना की तैयारियों और रणनीतियों पर चर्चा करना था।
- ✓ पायलट योजना में 25 शहरों को शामिल किया गया है, जिनमें औद्योगिक केंद्र, प्रवासी केंद्र, आकांक्षी जिले, और बंदरगाह शहर शामिल हैं।
- ✓ यह पायलट योजना 1 अक्टूबर 2024 से तीन महीने तक चलेगी, जिसमें शुरुआत के एक महीने में प्रभावी कार्यान्वयन के लिए तैयारी की जाएगी।

पायलट योजना के उद्देश्य:

पायलट योजना को विशेष रूप से अनौपचारिक क्षेत्र के भीतर कमजोर समूहों के उत्थान के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख श्रमिक वर्गों को लाभान्वित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है:

- निर्माण श्रमिक, गिग श्रमिक, अपशिष्ट श्रमिक,
- घरेलू श्रमिक, परिवहन श्रमिक, देखभाल श्रमिक

ये श्रमिक वर्ग कम वेतन, खतरनाक परिस्थितियों, और सामाजिक सुरक्षा की सीमित पहुँच के कारण विभिन्न प्रकार की व्यावसायिक, सामाजिक और आवासीय कमजोरियों का सामना करते हैं।

पायलट योजना के लक्ष्य:

- ✦ सूक्ष्म उद्यमों के लिए वित्तीय सहायता: छोटे उद्यमों को वित्तीय सहायता प्रदान करना ताकि उन्हें स्थिरता मिल सके।
- ✦ सामाजिक सुरक्षा तक पहुँच: श्रमिकों को सुरक्षा योजनाओं और सामाजिक लाभों से जोड़ना।
- ✦ ऋण सुविधा: छोटे उद्यमियों को उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए ऋण की सुविधा प्रदान करना।
- ✦ नवाचार और सहयोग को बढ़ावा देना: गरीबी उन्मूलन के लिए नए और सहयोगात्मक तरीकों को लागू करना।

कार्यक्रम का दीर्घकालिक उद्देश्य:

इस कार्यशाला और पायलट योजना का दीर्घकालिक उद्देश्य रणनीतिक हस्तक्षेप और सहयोगात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से शहरी आजीविका परिदृश्य को नया आकार देना है। इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि शहरीकरण के लाभ समाज के सबसे कमजोर वर्गों तक समान रूप से पहुँचे और शहरी क्षेत्रों में गरीबी का उन्मूलन हो सके।

निष्कर्ष: शहरी गरीबी उन्मूलन के लिए यह पायलट योजना और कार्यशाला एक महत्वपूर्ण पहल है, जो अनौपचारिक क्षेत्रों में कार्यरत श्रमिकों के उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

वेक्स एनीमे और मंगा प्रतियोगिता (WAM)

भारत में एनीमे और मंगा संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने मीडिया एंड एंटरटेनमेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एमईएआई) के सहयोग से वेक्स एनीमे और मंगा प्रतियोगिता (WAM!) का आधिकारिक रूप से शुभारंभ किया है। यह प्रतियोगिता 'क्रिएट इन इंडिया चैलेंज' का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य स्थानीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना और भारतीय दर्शकों के बीच जापानी मंगा और एनीमे में बढ़ती रुचि का लाभ उठाना है।

WAM के बारे में:

WAM! भारतीय रचनाकारों को लोकप्रिय जापानी कला शैलियों के स्थानीय संस्करण तैयार करने का अनूठा अवसर प्रदान करती है। इसका लक्ष्य मंगा और एनीमे में रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक मजबूत प्लेटफॉर्म स्थापित करना है, जिससे उन्हें घरेलू और विदेशी दर्शकों की जरूरतों को पूरा करने का मौका मिले।

प्रतियोगिता की श्रेणियां:

WAM! में तीन मुख्य श्रेणियां शामिल हैं:

1. मंगा (जापानी शैली की कॉमिक्स):

- ✓ छात्र और प्रोफेशनल श्रेणी के लिए व्यक्तिगत भागीदारी:
 - ✦ 2 पेज मंगा जिसमें कम से कम 4 पैनल हों, स्याही और रंग (भौतिक / डिजिटल)।

2. वेबटून (डिजिटल माध्यमों के लिए वर्टिकल कॉमिक्स):

- ✓ छात्र और प्रोफेशनल श्रेणी के लिए व्यक्तिगत भागीदारी:
 - ✦ छात्र: 7 पैनल (स्याही और रंग)।
 - ✦ प्रोफेशनल: 10 पैनल (स्याही और रंग)।

3. एनीमे (जापानी शैली का एनीमेशन):

- ✓ छात्र और प्रोफेशनल श्रेणी के लिए टीम भागीदारी (4 लोगों तक):
 - ✦ छात्र: दी गई स्क्रिप्ट के अनुसार 10 सेकंड का एनीमे।
 - ✦ प्रोफेशनल: दी गई स्क्रिप्ट के अनुसार 15 सेकंड का एनीमे।

प्रतियोगिता की संरचना और कार्यक्रम:

प्रतिभागी व्यक्तिगत रूप से या टीमों (4 लोगों तक) के रूप में प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। कार्यक्रम दो स्तरों पर आयोजित किया जाएगा:

- ✦ राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं: ग्यारह शहरों में।
- ✦ राष्ट्रीय स्तर पर फिनाले।

मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में मरम्मत योग्यता सूचकांक

सरकार के उपभोक्ता मामले विभाग (डीओसीए) ने मरम्मत योग्यता सूचकांक के लिए एक सशक्त ढांचा विकसित करने के उद्देश्य से एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। इस समिति की अध्यक्षता श्री भरत खेड़ा कर रहे हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं को उनके उत्पादों की मरम्मत संबंधी जानकारी में अधिक पारदर्शिता लाना और तकनीकी उद्योग में नवीकरणीय कार्यप्रणाली को बढ़ावा देना है।

मुख्य उद्देश्य:

- ✓ उपभोक्ताओं को सशक्त बनाना: यह सूचकांक उपभोक्ताओं को उनके उत्पादों की मरम्मत के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान करेगा, जिससे वे सूचित निर्णय ले सकें।
- ✓ अक्षय प्रौद्योगिकी उद्योग का समर्थन: डीओसीए ने यह भी लक्ष्य रखा है कि यह पहल अधिक अक्षय प्रौद्योगिकी उद्योग को बढ़ावा देगी।

कार्यशाला के प्रमुख बिंदु:

- ✦ इसका उद्देश्य उत्पाद डिजाइन में दीर्घकालिकता को बढ़ावा देना, मरम्मत संबंधी जानकारी की उपलब्धता, और उत्पादों के बंद होने के बाद स्पेयर पार्ट्स की उपलब्धता के बारे में आम सहमति बनाना था।
- ✦ कार्यशाला में यह विचार किया गया कि मोबाइल और इलेक्ट्रॉनिक्स सामान की मांग तेजी से बढ़ रही है, जबकि उनके उपयोग की अवधि कम है।

मरम्मत योग्यता सूचकांक की विशेषताएँ:

- ✦ यह एक उपभोक्ता-केंद्रित सूचकांक होगा जो उपभोक्ताओं को उनके उत्पादों की मरम्मत की जरूरतों के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाएगा।
- ✦ सूचकांक उपभोक्ताओं को उत्पादों की तुलना करने की सुविधा प्रदान करेगा, जिससे उन्हें सतत विकास के सिद्धांतों के अनुरूप विकल्प चुनने में मदद मिलेगी।

महत्वपूर्ण घटक:

1. व्यापक मरम्मत जानकारी: मरम्मत नियमावली, निदान, और आवश्यक उपकरणों की सूची तक पहुंच।
2. सुलभ स्पेयर पार्ट्स: पहचान में आसान और समय पर डिलीवरी।
3. किफायती उपकरण: सस्ते और सुरक्षित उपकरण उपलब्ध कराना।
4. मॉड्यूलर डिजाइन: प्रमुख घटकों का डिजाइन स्वतंत्र पहुंच और मॉड्यूलरिटी के लिए किया जाएगा।
5. आर्थिक व्यवहार्यता: यह सुनिश्चित करना कि मरम्मत के कल पूर्ण और श्रम की लागत का उपभोक्ता आसानी से वहन कर सके।

डेंगू: बढ़ते मामलों की चिंता

भारत के कई शहरों में डेंगू के मामलों में वृद्धि हो रही है। इस वर्ष, दुनिया भर में, विशेषकर ब्राजील और अन्य दक्षिण अमेरिकी देशों में, डेंगू के मामलों की संख्या रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आंकड़ों के अनुसार, डेंगू के मामले हर साल बढ़ रहे हैं।



डेंगू क्या है?

- ✓ **संक्रामक रोग:** डेंगू एक वायरल संक्रमण है, जो एडीज एजिटी मच्छरों के माध्यम से फैलता है।
- ✓ **लक्षण:** संक्रमित लोगों को हल्के लक्षणों का अनुभव होता है, जैसे: बुखार, सिरदर्द, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, उल्टी, आंखों के पीछे दर्द, चकते
- ✓ **गंभीर मामले:** गंभीर मामलों में आंतरिक रक्तस्राव हो सकता है, जिससे मृत्यु का खतरा बढ़ता है।

डेंगू के मामलों में वृद्धि:

- ✦ **पिछले 20 वर्षों में:** डेंगू के मामलों में "दस गुना वृद्धि" देखी गई है। इसे "विकराल संक्रामक रोग" माना गया है।
- ✦ **WHO की रिपोर्ट:** अगस्त 2024 तक, दुनिया भर में 1.2 करोड़ से अधिक डेंगू के मामले और 6,991 मौतें हुई हैं।
- ✦ **पिछले वर्ष की तुलना:** यह पिछले वर्ष के 5.27 मिलियन मामलों की तुलना में दोगुना है।

भारत में डेंगू की स्थिति:

- ✦ **हालात:** पिछले दो महीनों में कई शहरों में डेंगू के मामले बढ़े हैं।
- ✦ **संख्याएँ:** जून के अंत तक, 32,000 से अधिक मामले और 32 मौतें हुईं।
- ✦ **स्वास्थ्य सचिव का बयान:** इस वर्ष डेंगू के मामलों में लगभग 50% वृद्धि हुई है।

डेंगू के फैलने के कारण:

1. **शहरीकरण:** घनी आबादी वाले क्षेत्रों में मच्छरों के प्रजनन के लिए अनुकूल वातावरण होता है।
2. **जलवायु परिवर्तन:** बढ़ते तापमान के कारण मच्छरों का प्रजनन नई जगहों पर भी संभव हो गया है।
3. तेज़ी से होने वाले **आवागमन** से संक्रमण फैलता है।

डेंगू को रोकने के उपाय:

- ☑ **घर के आसपास सफाई:** सुनिश्चित करें कि घर और आसपास पानी जमा न हो।
- ☑ **मच्छरों से बचाव:** पूरी आस्तीन के कपड़े पहनें, खासकर दिन में।
- ☑ **स्वास्थ्य प्रणाली में सुधार:** प्रकोप की निगरानी और भविष्यवाणी के लिए स्वास्थ्य अधिकारियों का ध्यान।

डेंगू का टीका:

- ☑ **WHO की सिफारिश:** सनोफी का डेंगवैक्सिया और टेकेडा का क्यूडेंगा।
- ☑ **भारत में स्थिति:** ये टीके अभी भारत में मंजूर नहीं हुए हैं, लेकिन कई टीकों पर काम चल रहा है।

कांगो बेसिन: पारिस्थितिकी और संरक्षण के लिए आवश्यक वित्त पोषण

कांगो बेसिन, अपने महत्वपूर्ण पारिस्थितिक महत्व के बावजूद, दक्षिण-पूर्व एशिया के अमेज़न और बोर्नियो-मेकांग बेसिन की तुलना में वित्तीय सहायता के मामले में काफी पीछे है। हाल के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि कांगो बेसिन को वानिकी और पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक वित्त पोषण का केवल 4% प्राप्त हुआ है।

कांगो बेसिन को मिलने वाला वित्त पोषण:

- ✓ **ग्लोबल फंडिंग:** 2017 और 2021 के बीच, कांगो बेसिन को सिर्फ 40 मिलियन डॉलर मिले।
- ✓ **दूसरी तुलना:** अमेज़न और बोर्नियो-मेकांग बेसिन को इसी अवधि में 1 बिलियन डॉलर का वित्त पोषण मिला।
- ✓ **महत्व:** कांगो बेसिन को पृथ्वी का दूसरा 'फेफड़ा' कहा जाता है, क्योंकि यह वैश्विक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन का लगभग 10 वर्षों का हिस्सा सोखता है।



HIFOR पहल का परिचय:

वन्यजीव संरक्षण सोसायटी (WCS) ने कांगो बेसिन के संरक्षण के लिए एक अभिनव तंत्र विकसित किया है, जिसे हाई इंटीग्रिटी फॉरेस्ट इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव (HIFOR) कहा जाता है।

- ✦ **उद्देश्य:** जलवायु विनियमन को बनाए रखना, वन प्रबंधकों को दीर्घकालिक वित्त पोषण प्रदान करना, और जैव विविधता को संरक्षित करना।
- ✦ **प्रमाणपत्र प्रणाली:** यह प्रणाली उच्च गुणवत्ता वाले वन के संरक्षण में रुचि रखने वालों को प्रमाणपत्र प्रदान करती है, जिसका उपयोग वित्तीय लाभ के लिए किया जा सकता है।

नौआबेले-नडोकी राष्ट्रीय उद्यान का महत्व:

- ✦ **प्रमुख जैव विविधता क्षेत्र:** नौआबेले-नडोकी नेशनल पार्क ने एचआईएफओआर पहल की पहली परियोजना को शुरू किया है।
- ✦ **पारिस्थितिकी अखंडता:** यह पार्क जंगली हाथियों, पश्चिमी तराई गोरिल्ला और चिम्पांजी की बड़ी आबादी का समर्थन करता है।
- ✦ **वित्त पोषण तंत्र:** पार्क का प्रबंधन स्थानीय समुदायों की भागीदारी के साथ किया जा रहा है।

संकट और समाधान:

- ☑ **खतरों का सामना:** पार्क को अवैध शिकार, अवैध मछली पकड़ने, और वन कटाई से खतरा है।
- ☑ **प्रबंधन की प्रगति:** हाल के वर्षों में पार्क प्रबंधन में सुधार हुआ है, जिससे अवैध गतिविधियों में कमी आई है।

निष्कर्ष: कांगो बेसिन का संरक्षण और वित्त पोषण एक गंभीर मुद्दा है। HIFOR पहल जैसे अभिनव तंत्र से वित्तीय सहायता प्राप्त कर, इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी की रक्षा की जा सकती है। यदि इन पहलों को सफलतापूर्वक लागू किया जाता है, तो यह वैश्विक स्तर पर वनों के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!





APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

2024

GA FOUNDATION

RECORDED BATCH



Subject

HISTORY ,POLITY

GEOGRAPHY

ECONOMICS

Price

1499/-

**Validity
1 Year**

By Ankit Avasthi Sir



GA FOUNDATION

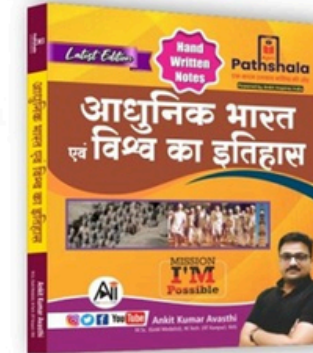
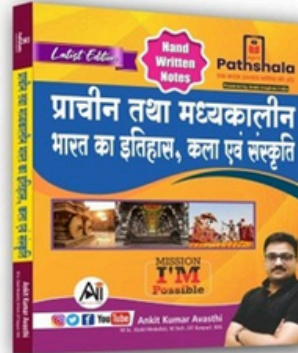
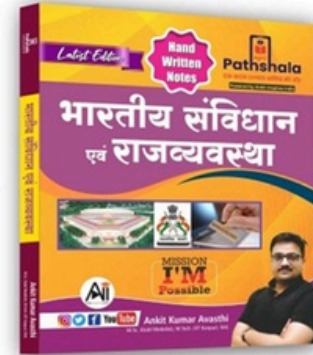
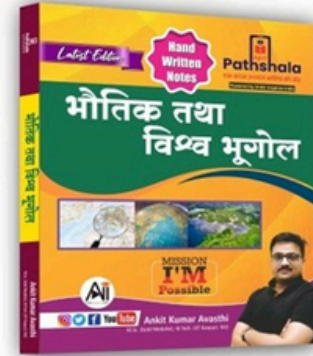
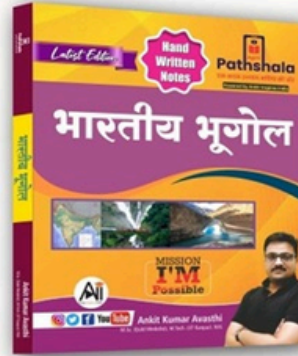
Hand Written
Notes


Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ Only
1999

4 पुस्तकों
का
सम्पूर्ण सेट



अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**

RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now

